

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

★ कलस हिन्दुस्तानी-तौरेत ★

राग श्री मारू

सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम ।
सो बीतक कहूँ तुमको, उड़ जासी सब भरम ॥१॥
रास कह्या कछु सुनके, अब तो मूल अंकूर ।
कलस होत सबन को, नूर पर नूर सिर नूर ॥२॥
कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन ।
सो तो अब जाहेर भई, जो अग्या थें उतपन ॥३॥
मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल ।
सो सुख सनमंधियनसों, कहूं सो दो एक बोल ॥४॥
मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ ।
कहे तूं दे पड़उतर, जो मैं पूछत हों तुझ ॥५॥
तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन ॥६॥
तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार ।
विध सारी याकी कहो, इन जिमी के प्रकार ॥७॥

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात ।
 मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत ॥८॥
 सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल ।
 ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल ॥९॥
 मैं न पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर ।
 पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर ॥१०॥
 ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख^१ ।
 कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत ॥११॥
 जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड ।
 चौदे तबक चारों तरफों, परपंच खड़ा प्रचंड ॥१२॥
 यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र ।
 तिमिर तेज रूत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र ॥१३॥
 तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास ।
 साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास ॥१४॥
 उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर ।
 तिनथें कछू न सूझहीं, जिमी आप ना घर ॥१५॥
 जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर ।
 जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर ॥१६॥
 काल ना देखें इन फेरे, याही तिमर के फंद ।
 ए सूरज आंखों देखिए, पर याही फंद के बंध ॥१७॥
 वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल ना समाए ।
 ए पांचो आप देखाए के, फेर ना पैदा हो जाए ॥१८॥
 या भांत अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसों दिस ।
 ए मोहजल लेहेरां लेवहीं, सागर सब एक रस ॥१९॥

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल ।
 कहां कल किल्ली^१ कुलफ^२, जो द्वार पाइए सूल ॥२०॥
 ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तीनों ही घेर ।
 ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए ना काहूं सेर^३ ॥२१॥
 ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध न सूझे सल ।
 ए सुध काहूं न परी, कई गए कर कर बल ॥२२॥
 ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप नहीं गम ।
 जोत दीपक इत क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम ॥२३॥
 ए देखे ही परिण दुख में, कोई ब्राध को रचियो रोग ।
 छुटकायो छूटे नहीं, नहीं ना देखन जोग ॥२४॥
 टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर ।
 गुन पख अंग इंद्रियां, कियो अंधेरी में अंधेर ॥२५॥
 तत्व पांचो जो देखिए, यामें ना कोई थिर ।
 प्रले होसी पल में, वैराट सचरा चर ॥२६॥
 ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नहीं पार ।
 नेत नेत कहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार ॥२७॥
 मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार ।
 निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार ॥२८॥
 पंथ पैडे कई चलहीं, कई भेख दरसन ।
 ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे ना कोई निकसन ॥२९॥
 यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाएं ।
 कई उदम^४ जो कीजिए, तो भी तिमर न छोड़े ताए ॥३०॥
 इत जुध किए कई सूरमें, पेहेन टोप सिल्ले पाखर ।
 बचन बड़ें रन बोल के, सो भी उलट पड़े आखिर ॥३१॥

ए सुध अजुं किन ना परी, बढ़त जात विवाद ।
 ए खेल तो है एक खिन का, पर जाने सदा अनाद ॥३२॥
 खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर ।
 ए निरखे मैं नीके कर, अजुं ए भी मिने अंधेर ॥३३॥
 ए द्वार कोई खोल के, कबहुं ना निकस्या कोए ।
 ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए ॥३४॥
 ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध ।
 या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध ॥३५॥
 निज बुध आवे अग्याएँ, तोलों ना छूटे मोह ।
 आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए ॥३६॥
 ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न ।
 कहूँ और अजुं बोहोत है, वे भी सुनो वचन ॥३७॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥३७॥

प्रकरण खोज का - राग श्री मारू

पिया मैं बोहोत भांत तोको खोजिया, छोड़ धंधा सब और ।
 पूछत फिरों सोहागनी, कोई बताओ पिया ठौर ॥१॥
 मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल ।
 कोई ना कहे मैं देखिया, जिनों नीके कर खोजेल ॥२॥
 सास्त्र साधू जो साख्यां, मैं देखी सबों की मत ।
 पिया सुध काहू में नहीं, कोई न बतावे तित ॥३॥
 छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार ।
 संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार ॥४॥
 झूठा ए छल कठन, काहूं ना किसी की गम ।
 कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम ॥५॥

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत ।
 इनमें सीधा दौड़के, कोई ना निकस्या जीत ॥६॥
 मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए ।
 इस मंडल में आतमा, चल्या ना कोई जगाए ॥७॥
 मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार ।
 तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक कई हार ॥८॥
 मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट ।
 तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं ना देख्या दृष्ट ॥९॥
 वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम^१ ।
 एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम ॥१०॥
 आद मध^२ और अबलों, सब बोले या विध ।
 केवल विदेही हो गए, तिन भी ना कही सुध ॥११॥
 वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक ।
 बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक ॥१२॥
 बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहांलों पोहोंचे मन ।
 ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन ॥१३॥
 वेदांती भी कहे थके, द्वैत खोजी पर पर ।
 अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर ॥१४॥
 मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट ना सब्दा कोए ।
 खट प्रमान थें रहित है, सो दृढ़ कैसे होए ॥१५॥
 द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतई को विस्तार ।
 छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार ॥१६॥
 ए अलख किनहूं ना लखी, आदै थें अकल ।
 ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल ॥१७॥

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर फेर आवे जाए ।
 जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए ॥१८॥
 ऊपर तले मांहे बाहेर, दसो दिसा सब एह ।
 छोड़ याको कोई ना कहे, ठौर खसम का जेह ॥१९॥
 जो कछू कहिए वचने, सो तो सब अनित ।
 वतन सरूप कोई न कहे, तो क्यों कर जाइए तित ॥२०॥
 पेड़^१ काली किन न देखी, सब छाया में रहे उरझाए ।
 गम छायाकी^२ भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए ॥२१॥
 ए जाए न उलंघी देखीती, ना कछू होए पेहेचान ।
 तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक ना सुन्यो निसान ॥२२॥
 खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत ।
 किने ना कह्या ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत ॥२३॥
 ए मत वेद वेदांत की, सास्त्र सबों ए ग्यान ।
 सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान ॥२४॥
 या विध ग्यान जो चरचही, सो मैं देख्या चित ल्याए ।
 ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए ॥२५॥
 खिन में कहे सब ब्रह्म है, खिन में बंझा पूत ।
 मद माते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप ॥२६॥
 खिन में कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए ।
 यो संग संसा दृढ़ हुआ, सब धोखे रहे फिराए ॥२७॥
 खिन में कहे है आप में, खिन में कहे बाहेर ।
 खिन में मांहे न बाहेर, याको शब्द न कोई निरधार ॥२८॥
 खिन में कछू और कहे, खिन में और की और ।
 सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रहेवे ठौर ॥२९॥

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए ।
 ऐसे साधू सास्त्र में, दृढ़ ना सब्दा कोए ॥३०॥
 ए सब सींग ससिक^१, बंझा पूत वैराट ।
 फूल गगन नाम धर के, उड़ाए देवें सब ठाट ॥३१॥
 आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान ।
 देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान^२ ॥३२॥
 कोई ना परखे छल को, जिन छल में है आप ।
 तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात ॥३३॥
 अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर^३ ।
 ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर ॥३४॥
 सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा न निकस्या पार ।
 खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार^४ ॥३५॥
 ए ख्वाबी दम सब नींद लों, ए दम नींद के आधार ।
 जो कदी आगे बल करे, तो गले नींद में निराकार ॥३६॥
 तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़े नींद निदान ।
 नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों करे पेहेचान ॥३७॥
 बड़ी बुध वाले जो कहावहीं, सो सीतल भए इन भांत ।
 ना पेहेचान छल वतन की, सो सुन्य गले ले स्वांत ॥३८॥
 ए पुकार साधू सुनके, हट रहे पीछे पाए ।
 पार सुध किन ना परी, सब इतहीं रहे उरझाए ॥३९॥
 जिनहूं जैसा खोजिया, सो बोले बुध माफक ।
 मैं देखे सब्द सबन के, जो गए जाहेर मुख बक ॥४०॥
 या बिध तो हुई नास्त, सो नास्त^५ जानो जिन ।
 सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन ॥४१॥

जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार प्रवान ।
 सो ए छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान ॥४२॥
 सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ ।
 ओ खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ ॥४३॥
 सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास ।
 प्रेमै में मगन भए, और होए गयो सब नास ॥४४॥
 प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए ।
 सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए ॥४५॥
 सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल ।
 या विध कोई ना समझहीं, बात पड़ी है वल ॥४६॥
 साधू सास्त्र जो बोलहीं, सो तो सुनता है संसार ।
 पर मूल माएने गुझ हैं, सोई गुझ सब्द हैं पार ॥४७॥
 सब कोई देखे सास्त्र को, सास्त्र तो गोरख धंध ।
 मूल कड़ी पाए बिना, तोलो देखीता ही अंध ॥४८॥
 ऐसा तो कोई न मिल्या, जो दोनों पार प्रकास ।
 मगन पिया के प्रेम में, उधर भी उजास ॥४९॥
 जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध ।
 सब्दें सब समझावहीं, कहे वतन की विध ॥५०॥
 कड़ी बतावे मूल की, सास्त्र निकाले वल ।
 ठौर खसम सब केहेवहीं, जो है सदा नेहेचल ॥५१॥
 आप ओलखावे आप में, आप पुरावे साख ।
 आत्म को परआत्मा, नजरों आवे साख्यात ॥५२॥
 और सब्द भी हैं सही, पिया करसी परदा दूर ।
 सब मिल कदमों आवसी, तब हम पिया हजूर ॥५३॥

आगम की बानी कहे, पिया आवेंगे तेहेकीक ।
 तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत^१ ॥५४॥
 मन चित बुध दृढ़ किया, पिया न करें निरास ।
 महामत नेहेंचें कहें, होसी दुलहे सों विलास ॥५५॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥९२॥

विरह तामस का प्रकरण - राग सिंधुड़ी कड़खा

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
 अजू आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर ।
 दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर^२ सरीर ॥१॥
 कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक^३ बंको सूरु किनों न अगमाए ।
 धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए ॥२॥
 सागर नीर खारे लेहेरां मार मारे फिरें, बेटो^४ बीच बेसुध पछाड़ खावे ।
 खेलें मछ मिले गलें ले उछाले, संधो संध बंधे अंधों यों जो भावे ॥३॥
 दाहो दसे दसों दिस सबे धखे, लाल झालां चले इंड न झलाए ।
 फोड़ आकास फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए ॥४॥
 घाट अवघाट सिलपाट^५ अति सलवली^६, तहां हाथ ना टिके पपील^७ पाए ।
 वाओ वाए बढे आग फैलाए चढे, जले पर अनलें^८ ना चले उड़ाए ॥५॥
 पेहेन पाखर^९ गज^{१०} घंट बजाए चल, पैठ^{११} सकोड़ सुई नाके समाए ।
 डार आकार संभार जिन ओसरे^{१२}, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए ॥६॥
 बोहोत बंध फंद धंध अजू कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे ।
 निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे ॥७॥
 मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विस्वास ।
 कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दर्ई पिया अग्या जाग करूं विलास ॥८॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥१००॥

१. विश्वास । २. क्षण भंगुर । ३. तीन बल वाली । ४. टापू । ५. चट्टान । ६. चिकनी । ७. कीड़ी ।
 ८. अगनी में, अगल पक्षी । ९. लोहे की झूल । १०. हाथी । ११. घुसना । १२. भूलना ।

राग श्री सामेरी

पिया मोहे स्वांत न आवहीं, ना कछू नैनों नीर ।
 पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर ॥१॥
 सब अंग अगनी जलके, जात उड़े ज्यों गरद ।
 क्यों इत स्वांत जो आवहीं, जित दुलहे का दरद ॥२॥
 हाड़े हाड़ पिसात हैं, चकी बीच जिन भांत ।
 आराम ना जीवरा होवहीं, तो क्यों कर उपजे स्वांत ॥३॥
 सब अंग सारन^१ होए के, सारे^२ सकल संधान ।
 अपनी इंद्री आप को, उलट लगी है खान ॥४॥
 उड़ी जो नींद अंदर की, पड़त न क्यों ही चैन ।
 प्यारी पिउ के दरस की, कब देखूं मुख नैन ॥५॥
 पिया बिन कछुए न भावहीं, जानूं कब सुनों पिया बैन ।
 जोलों पिउ मुझे ना मिले, तोलों तलफत हों दिन रैन ॥६॥
 घाटी टेढ़ी सकड़ी, तीखी खांडा धार ।
 रोम रोम सांगा^३ सामिया^४, तामें चढूं कर सिनगार ॥७॥
 नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार ।
 बेटो^५ बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार ॥८॥
 तान तीखे आड़े उलटे, और लेत भमरियां जल ।
 मिने मछ लड़ाइयां, यामें लेवें सारे निगल ॥९॥
 ए दुनी दिल अंधी दिवानी, और बंधी संधों संध ।
 हाथों हाथ न सूझहीं, तिमर तो या सनंध ॥१०॥
 धखत दाह दसो दिस, झालां इंड न समाए ।
 फोड़ आकास पर फिरे, किन जाए ना उलंधी ताए ॥११॥

घाट पाट अति सलवली^१, तहां हाथ न टिके पपील^२ पाए ।
 पवने अगनी पर जले, किन चढ़यो न उड़यो जाए ॥१२॥
 इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए ।
 पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए ॥१३॥
 दीजे न आल^३ आकार को, पिउ मिलना अंग इन ।
 दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन ॥१४॥
 बोहोत फंद बंध धंध कई, कई कोटान लाखों लाख ।
 अंदर नजरों आवही, पर मुख न देवे भाख ॥१५॥
 आड़े चौदे तबक मोह, निराकार निरंजन ।
 याके पार पोहोचना, इन पार पिउ वतन ॥१६॥
 पाँउ चले ना पर उड़े, बीच तो ऐसे पंथ ।
 पर ए सब तोलों देखिए, जोलों ना दृष्टें कंथ ॥१७॥
 आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन ।
 कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसम के बिन ॥१८॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥११८॥

विरह के प्रकरण - राग देसांकी

तलफे तारुनी रे, दुलही^४ को दिल दे ।
 सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले ॥१॥
 सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस ।
 न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस ॥२॥
 हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल^५ विरह अगिन ।
 मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन ॥३॥
 रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार ।
 पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार ॥४॥

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव ।
 ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव ॥५॥
 ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग ।
 हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग ॥६॥
 विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए ।
 अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए ॥७॥
 ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आँगन^१ न सुहाए ।
 रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए ॥८॥
 ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए ।
 राजप्रथी^२ पाँउ दाब के, निकसी या विध होए ॥९॥
 विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे ।
 लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले ॥१०॥
 आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक ।
 पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक ॥११॥
 एह विध मोहे तुम दर्ई, अपनी अंगना जान ।
 परदा बीच टालने, तार्थें विरहा परवान ॥१२॥
 ॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥१३०॥

राग धना मेवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिलके बिछुरी होए, मेरे दुलहा ।
 ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा ।
 विरहनी विलखे तलफे तारूनी, तारूनी तलफे कलपे कामनी ॥१॥
 बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन ।
 तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन ॥२॥

विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए ।
 सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए ॥३॥
 विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक ।
 पिंड ना देखों ब्रह्मांड, देखो दुलहा अपनो एक ॥४॥
 विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर ।
 चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर ॥५॥
 आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए ।
 विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अंकूर रही भराए ॥६॥
 विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार ।
 दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार ॥७॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥१३७॥

राग सोख मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान ।
 एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान ॥१॥
 चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुन ।
 न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन ॥२॥
 लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद ।
 न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद ॥३॥
 एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन ।
 न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन ॥४॥
 और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए ।
 इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए ॥५॥
 नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन ।
 इस्क तो आगे चल गया, सब्द समाना सुन ॥६॥

सब्द जो सूकया अंग में, हले नहीं हाथ पाए ।
 इस्क बेसुध न करे, रही अंदर बिलखाए ॥७॥
 पांपण पल ना लेवही, दसो दिस नैन फिराऊं ।
 देह बिना दौड़ो अन्दर, पिया कित मिलसी कहां जाऊं ॥८॥
 इस्क को ए लछन, जो नैनों पलक ना ले ।
 दौड़े फिरे न मिल सके, अन्दर नजर पिया में दे ॥९॥
 नजरों निमख ना छूटहीं, तो नहीं लागत पल ।
 अन्दर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल ॥१०॥
 जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार ।
 एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार ॥११॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥१४८॥

राग श्री धना काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए ।
 अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए ॥१॥
 दरद जो तेरे दुलहा, कर डार्यो सब नास ।
 पर आस ना छोड़े जीव को, करने तुम विलास ॥२॥
 विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन ।
 पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन ॥३॥
 लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस ।
 ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास ॥४॥
 मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा ना देऊं जिउ ।
 तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ ॥५॥
 जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम ।
 विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम ॥६॥

माया काया जीवसों, भान भून टूक कर ।
 विरहा तेरा जिन दिसा, मैं वारुं तिन दिस पर ॥७॥
 जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़्यो संग ।
 तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग ॥८॥
 मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ ।
 बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ ॥९॥
 जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन ।
 आस भी पूरी सुहागनी, और ब्रध^१ भी राख्यो विरहिन ॥१०॥
 तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर ।
 कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर ॥११॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥१५९॥

विरह को प्रकास - राग आसावरी

एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए ।
 पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे ॥१॥
 सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब ।
 अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब ॥२॥
 पिया जो पार के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार ।
 पार दरवाजे तब देखे, जब खोल देखाया पार ॥३॥
 कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग ।
 ता दिन थें पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग ॥४॥
 हुई पेहेचान पिउसों, तब कह्यो महामती नाम ।
 अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम ॥५॥
 बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान ।
 प्रकास पूरन वृद्ध हुआ, उड़ गया उनमान ॥६॥

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत ।
 ए मेहेर कही न जावहीं, सब सुध परी उतपत ॥७॥
 मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप ।
 कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप ॥८॥
 खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम ।
 बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम ॥९॥
 बीज आतम संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर ।
 या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर ॥१०॥
 नातो ए बात जो गुझ की, सो क्यों होए जाहेर ।
 सोहागिन प्यारी मुझ को, सो कर ना सकों अंतर ॥११॥
 नेक कहूं या नूर की, कछुक इसारत अब ।
 पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी देखसी सब ॥१२॥
 ए जो विरहा बीतक कही, पिया मिले जिन सूल ।
 अब फेर कहूं प्रकास थें, जासों पाइए माएने मूल ॥१३॥
 ए विरहा लछन मैं कहे, पर नहीं विरहा ताए ।
 या विध विरह उदम^१ की, जो कोई किया चाहे ॥१४॥
 विरह सुनते पिउ का, आह ना उड़ गई जिन ।
 ताए वतन सैयां यों कहें, नहीं न ए विरहिन ॥१५॥
 जो होवे आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध ।
 सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां थें बुध ॥१६॥
 पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए ।
 मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे ॥१७॥
 के तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें ।
 पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए ॥१८॥

पंतग और पतंग को, जो सुध दीपक दे ।
 तो होवे हांसी तिन पर, कहे नहीं पतंग ए ॥१९॥
 दीपक देख पीछा फिरे, साबित राखे अंग ।
 आए देवे सुध और को, सो क्यों कहिए पतंग ॥२०॥
 जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए ।
 पर ए वचन तो तब कहे, जब लई पिया उठाए ॥२१॥
 ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम ।
 विरहिन कबहूँ ना करे, यों विरहा अनूकरम^१ ॥२२॥
 विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार ।
 सोहागिन आतम पिउ की, वतन पार के पार ॥२३॥
 अब कहूं नेक अंकूर की, जाए कहिए सोहागिन ।
 सो विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन ॥२४॥
 सोई सुहागिन आइयां, खसम की विरहिन ।
 अंतरगत पिया पकरी, ना तो रहे ना तन ॥२५॥
 ए सुध पिया मुझे दर्ई, अन्दर कियो प्रकास ।
 तो ए जाहेर होत है, जो गयो तिमर सब नास ॥२६॥
 प्यारी पिया सोहागनी, सो जुबां कही न जाए ।
 पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए ॥२७॥
 अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत ।
 पर ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए के देत ॥२८॥
 छलथें मोहे छुड़ाए के, कछू दियो विरहा संग ।
 सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनों अंग ॥२९॥
 अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ ।
 देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ ॥३०॥

दुख पावत हैं सोहागनी, सो हम सह्यो न जाए ।
 हम भी होसी जाहेर, पर तूं सोहागनियां जगाए ॥३१॥
 सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन ।
 प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देखो मन ॥३२॥
 तोसों ना कछू अन्तर, तूं है सोहागिन नार ।
 सत सब्द के माएने, तूं खोलसी पार द्वार ॥३३॥
 जो कदी जाहेर न हुई, सो तुझे होसी सुध ।
 अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध ॥३४॥
 सब ए बातें सूझसी, कहूं अटके नहीं निरधार ।
 हुकम कारन कारज, पार के पारै पार ॥३५॥
 चौदे तबक एक होएसी, सब हुकम के प्रताप ।
 ए सोभा होसी तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप ॥३६॥
 जो कोई सब्द संसार में, अर्थ ना लिए किन कब ।
 सो सब खातिर सोहागनी, तूं अर्थ करसी अब ॥३७॥
 तूं देख दिल विचार के, उड़जासी सब असत ।
 सारों के सुख कारने, तूं जाहेर हुई महामत ॥३८॥
 पेहेले सुख सोहागनी, पीछे सुख संसार ।
 एक रस सब होएसी, घर घर सुख अपार ॥३९॥
 ए खेल किया जिन खातिर, सो तूं कहियो सोहागिन ।
 पेहेले खेल दिखाए के, पीछे मूल वतन ॥४०॥
 अंतर सैयों से जिन करे, जो सैयां हैं इन घर ।
 पीछे चौदे तबक में, जाहिर होसी आखिर ॥४१॥
 तें कहे वचन मुख थें, होसी तिनथें प्रकास ।
 असत उड़सी तूल ज्यों, जासी तिमर सब नास ॥४२॥

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल ।
 जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल ॥४३॥
 खसम खड़ा है अंतर, जेती सोहागिन ।
 तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन ॥४४॥
 आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास ।
 उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास ॥४५॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥२०४॥

राग श्री

सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात ।
 सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात ॥१॥
 जोलों पिउ परदे मिने, विश्व विगूती तब ।
 सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब ॥२॥
 जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध ।
 जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को ब्रोध ॥३॥
 ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए ।
 छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए ॥४॥
 दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल ।
 पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल ॥५॥
 सत जो ढांप्या ना रहे, उड़ाय दियो अंधेर ।
 नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर ॥६॥
 अब अंधेर कछू ना रह्या, जाहेर हुआ उजास ।
 तबक चौदे खसम का, प्रगट भया प्रकास ॥७॥
 जोलों तिमर ना उड़े, तोलों सृष्ट न होवे एक ।
 तिमर तीनों लोक का, उड़ाए दिया उठ देख ॥८॥

ए प्रकास है अति बड़ा, सो राखत हों अजू गोप ।
 जिन कोई ना सहे सके, तार्थें हलके करूं उद्योत ॥९॥
 ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और ।
 आद करके अबलों, किन कह्या ना पिया ठौर ॥९०॥
 ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथियल कोए ।
 जो किनका कथियल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए ॥९१॥
 केतेक ठौरों सोहागनी, तिन सब ठौरों उजास ।
 पर जब इत थें जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास ॥९२॥
 कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज ।
 जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे ना पकस्यो अवाज ॥९३॥
 क्यों रहे प्रकास पकस्यो, एह जोत अति जोर ।
 जब सब उजाला इत आईया, तब गई रैन भयो भोर ॥९४॥
 मैं अबला अरधांग हों, पिउ की प्यारी नार ।
 सब जगाऊं सोहागनी, तो मुझे होए करार ॥९५॥
 सैयों को वतन देखावने, उलसत मेरे अंग ।
 करने बात खसम की, मावत नहीं उमंग ॥९६॥
 नए नए रंग सोहागनी, आवत हैं सिरदार ।
 खेल जो होसी जागनी, नाहीं इन सुख को पार ॥९७॥
 जो पिउ प्यारी आवत, ताको गुझ राखों उजास ।
 बाट देखों और सैन की, सब मिल होसी विलास ॥९८॥
 ए उजास इन भांत का, जो कबूं निकसी किरन ।
 तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन ॥९९॥
 बात बड़ी इन खसम की, सो क्यों कर ढापूं अब ।
 सुख लेने को या समें, पीछे दुनियां मिलसी सब ॥२०॥

ए प्रकास जो पिउ का, टाले अंदर का फेर ।
 याही सब्द के सोर से, उड़ जासी सब अंधेर ॥२१॥
 और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास ।
 होसी सब में आनंद, चौदे तबक प्रकास ॥२२॥
 ॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥२२६॥

सोहागनियों के लछन

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान ।
 जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान ॥१॥
 आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन ।
 ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन ॥२॥
 रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन ।
 पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे ना तन ॥३॥
 ऊपर काहूं ना देखावहीं, जो दम ना ले सके खिन ।
 सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन ॥४॥
 आकीन ना छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन ।
 प्यारी पिउ के कारने, जीव को ना करे जतन ॥५॥
 रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन ।
 साफ दिल सोहागनी, कबहूं ना दुखावे किन ॥६॥
 ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर ।
 और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर ॥७॥
 खोज सोहागिन ना थके, जोलों पार के पारै पार ।
 नित खोजे चरनी^१ चढ़े, नए नए करे विचार ॥८॥
 खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद ।
 पल पल सब्द प्रकास हीं, श्रवणों एही स्वाद ॥९॥

सोहागिन तोलों खोज हीं, जोलों पाइए पिउ वतन ।
 पिउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निसदिन ॥१०॥
 ओतो आगे अंदर उजली, खिन खिन होत उजास ।
 देह भरोसा ना करे, पिया मिलन की आस ॥११॥
 विचार विचार विचारहीं, बेधे सकल संधान ।
 रोम रोम ताए भेदहीं, सत सब्द के बान ॥१२॥
 पार वतन के सब्द, अंग में जो निकसे फूट ।
 गलित गात सब भीगल, पिया सब्दें होए टूक टूक ॥१३॥
 खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावे गीत ।
 खिन रोवे सुध ना रहे, ए सोहागिन की रीत ॥१४॥
 पिउ बातें खेलें हंसे, गीत पिया के गाए ।
 रोवें उरझे पिउ की, बातनसों मुरछाए^१ ॥१५॥
 सोहागिन विरहा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ ।
 सोहागिन अंग जो पिउ की, पिउ सोहागिन अंग जिउ ॥१६॥
 जोलों पिउ सुध ना हुती, सोहागिन अंग में पिउ ।
 जब पिया जाहेर हुए, तब ले खड़ी अंग जिउ ॥१७॥
 जो होए सैयां सोहागनी, सो निरखो अपने निसान ।
 वचन कहे मैं जाहेर, सोहागनियों पेहेचान ॥१८॥
 बोहोत निसानी और हैं, प्रेम सोहागिन गुझ ।
 जब सैयां जाहिर हुई, तब होसी सबों सुझ ॥१९॥
 तुम हो सैयां सोहागनी, ए समझ लीजो दिल बूझ ।
 जब सैयां भेली भई, तब होसी बड़ा गुझ ॥२०॥
 ए सब्द जो कहती हों, सो कारन सब सैयन ।
 सोहागिन ढांपी ना रहे, सुनते एह वचन ॥२१॥

ए सब्द सुन सोहागनी, रहे ना सके एक पल ।
 तामें मूल अंकूर को, रहे ना पकड़यो बल ॥२२॥
 जब खसम की सुध सुनी, तब रहे ना सोहागिन ।
 ख्वाबी दम भी ना रहे, तो क्यों रहे सैयां चेतन ॥२३॥
 मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम ।
 या विध सब सैयन का, तसीहा^१ लेवें खसम ॥२४॥
 जो हुकम सिर लेय के, उठी ना अंग मरोर ।
 पिया सैयां सब देखहीं, तुम इस्क का जोर ॥२५॥
 जो सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर ।
 जैसा इस्क जिन पे, सो अब होसी जाहिर ॥२६॥
 जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार ।
 दरद बिना दुख होएसी, सो जानाँ निरधार ॥२७॥
 जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे ।
 सो इत लोक अलोक का, कछू न लाहा ले ॥२८॥
 लाहा तो ना लेवहीं, पर सामी हांसी होए ।
 अब ए हांसी सोहागनी, जिन कराओ कोए ॥२९॥
 जिन उपजे सैयन को, इन हांसी का भी दुख ।
 ए दुख बुरा सोहागनी, जो याद आवे मिने सुख ॥३०॥
 ए दुख तो नेहेचे बुरा, मेरी सैयांपे सह्यो न जाय ।
 जो कदी हांसी ना करे, पर जिन हिरदे चढ़ आए ॥३१॥
 जिन जुबां मैं दुख कहूं, सोए करूं सत^२ टूक ।
 पर ए दुख जिन तुमें लागहीं, तो मैं करत हों कूक ॥३२॥
 जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे ।
 हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए ॥३३॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥२५९॥

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर ।
 सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर ॥१॥
 पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नहीं कोए ।
 और नार सब माया, यामें भी विध दोए ॥२॥
 जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान ।
 पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहंगी पेहेचान ॥३॥
 सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और ।
 दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहंगी तीनों ठौर ॥४॥
 ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर ।
 ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर ॥५॥
 अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार ।
 ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार ॥६॥
 भूल गइयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ ।
 प्रकास पिया का मुझ पे, कहे समझाऊं अर्थ ॥७॥
 सबन को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन ।
 खेल देखाऊं खोल के, जिन विध ए उतपन ॥८॥
 ए खेल है जोरावर, बड़ो सो रचियो छल ।
 ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल ॥९॥
 तुम नहीं इन छल के, छल को जोर अमल ।
 सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल ॥१०॥
 तुम आइयां छल देखने, भिल^१ गैयां मांहें छल ।
 छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल ॥११॥
 ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग ।
 ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी जूठा दाग ॥१२॥

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस ।
 कमी कहे मैं ना करूं, पर तुमें छल हुआ सिरपोस ॥१३॥
 मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन ।
 जो कदी भूलियां छल में, तो फेर न आवे ए दिन ॥१४॥
 तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सैयां सबन ।
 ए हांसी सत ठौर की, कोई सैयां कराओ जिन ॥१५॥
 दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर ।
 तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पिउसों बैठी मुख फेर ॥१६॥
 तुम सुध पिउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर ।
 नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर ॥१७॥
 मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल ।
 जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल ॥१८॥
 अब देखो या छल को, जो देखन आइयां एह ।
 प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहेवे नहीं संदेह ॥१९॥
 अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर ।
 खोलूं कमाड़ कल^१ कुलफ^२, अन्तर मांहे बाहेर ॥२०॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥२७९॥

खेल के मोहोरों का प्रकरण

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम ।
 मांग्या खेल हिरस^३ का, सो देखलावें खसम ॥१॥
 भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल ।
 और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल ॥२॥
 इत बोए बिरिख^४ होत है, ताको फल पावे सब कोए ।
 बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए ॥३॥

इनमें जो ठौर अक्वल, जाको नाम नौतन ।
 जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन ॥४॥
 एह खेल तुम मांगिया, सो किया तुम खातिर ।
 ए विध सब देखाए के, पीछे कहूं वतन आखिर ॥५॥
 मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान ।
 खेले मन के भाव तें, सब आप अपनी तान ॥६॥
 स्वांग काछें जुदे जुदे, जुदे जुदे रूप रंग ।
 चलें आप चित चाहते, और रहे जो भेले संग ॥७॥
 अनेक सेहेर बाजार चौहटे, चौक चौवटे अनेक ।
 अनेक कसबी^१ कसब करते, हाट पीठ वसेक ॥८॥
 भेख सारे बनाए के, करें होहोकार ।
 कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार ॥९॥
 बिध बिध के भेख काछे, सारे जान प्रवीन ।
 वरन चारों खेलें चित दे, नहीं न कोई मतहीन ॥१०॥
 पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार ।
 आप चंगी^२ सब दुनियां, खेलत हैं नर नार ॥११॥
 वरन सारे पसरे, लोभें लिए करें उपाय ।
 बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय ॥१२॥
 नहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध ।
 सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध ॥१३॥
 सनमंध करते आप में, उछरंग अंग न माए ।
 केसर कसूंबे पेहेर के, सेहेर में फेरे खाए ॥१४॥
 सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र ।
 कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र ॥१५॥

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार ।
 विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहे बाजार ॥१६॥
 गाड़ें जालें हाथ अपने, रुदन करें जलधार ।
 सनमंधी सब मिलके, टलवलें नर नार ॥१७॥
 जनम होवे काहू के, काहू के होवे मरन ।
 कोई हिरदे हँसे हरखे, कोई सोक रुदन ॥१८॥
 धन खरचें खाएँ गफलतें, आपे बुजरक होए ।
 कीरत अपनी कराए के, खेल या बिध होए ॥१९॥
 कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए ।
 किसी के अवगुन बोले, किसी के गुन गाए ॥२०॥
 कोई मिने बेहेवारिए, कोई राने राज ।
 कोई मिने रांक रलझले, रोते फिरें अकाज ॥२१॥
 कोई पोंडे पलंग हेम के, कोई ऊपर ढोले वाए ।
 बात करते जी जी करे, ए खेल यों सोभाए ॥२२॥
 कोई बैठे सुखपाल में, कोई दौड़े उचाए^१ ।
 जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए ॥२३॥
 कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल ।
 अति बड़े बाजंत्र बाजे, जाने राज नेहेचल ॥२४॥
 साम सामी करे सैन्या, भारथ^२ होवे लोह अंग ।
 लज्या बांधे होवें टुकड़े, कहावें सूर अभंग ॥२५॥
 कोई मिने होए कायर, छोड़ लज्या भाग जाए ।
 कोई मारे कोई पकड़े, कोई गए आप बचाए ॥२६॥
 कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक ।
 जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक ॥२७॥

कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध ।
 मारते अरवाह काढ़ें^१, ए खेल या संध ॥२८॥
 जीते हरखे पौरसे^२, सुरातन^३ अंग न माए ।
 हारे सारे सोक पावें, सो करें मुख त्राहे त्राहे ॥२९॥
 कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग ।
 कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग ॥३०॥
 कई उदर कारने, फिरत होत फजीत ।
 कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत ॥३१॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥३१०॥

खेल में खेल

अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए ।
 भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए ॥१॥
 इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार ।
 इन भेखोंमें भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार ॥२॥
 कई द्योहरे अपासरे, कई मुनारे मसीत ।
 तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां^४ कई रीत ॥३॥
 कई भेख जो साध कहावें, कई पंडित पुरान ।
 कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान ॥४॥
 कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान ।
 कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान ॥५॥
 कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख ।
 सुध आप ना पार की, हिरदे अंधेरी विसेख ॥६॥
 कई लूचे कई मूड़े, कई बढ़ावें केस ।
 कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस ॥७॥

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बोहोत फारें कान ।
 कई माला तिलक धोती, कई धरें बैठे ध्यान ॥८॥
 कई जिंदे मलंग मुल्ला, कई बांग दे मन धीर ।
 कई जावें पाक होए, कई मीर पीर फकीर ॥९॥
 कई लंगरी बोदले, कई आलम पढ़े इलम ।
 कई ओलिए बेकैद सोफी, पर छोड़े नहीं जुलम ॥१०॥
 कई सती सीलवन्ती, कई आरजा अरधांग ।
 जती बरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग ॥११॥
 कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास ।
 कई जुगते देह दमे, पर छूटे नहीं जमफांस ॥१२॥
 कई सिवी कई वैष्णवी, कई साखी समरथ ।
 लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ ॥१३॥
 कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदान्त ।
 कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिद्धांत ॥१४॥
 कई अवतार तीर्थकर, कई देव दानव बड़े बल ।
 बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल ॥१५॥
 कई होदी^१ बोदी^२ पादरी, कई चंडिका चामंड ।
 बिना हिसाबें खेलहीं, जाहेर छल पाखंड ॥१६॥
 कई डिम्भ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान ।
 कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान ॥१७॥
 कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन ।
 कई मठ वाले पिंड पालें, कई फिरें होए नगिन ॥१८॥
 कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद ।
 कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं^३ राते सब्द ॥१९॥

कई संत जो महंत, कई देखीते दिगम्बर ।
 पर छल ना छोड़े काहू को, कई कापड़ी कलंदर ॥२०॥
 कई आचारी अप्रसी, कई करें कीरतन ।
 यों खेलें जुदे जुदे, सब परे बस मन ॥२१॥
 कई कीरतन करें बैठे, कई जाग जगन ।
 कई कथें ब्रह्मग्यान, कई तपें पंच अग्नि ॥२२॥
 कई इन्द्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह ।
 कई उर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए ॥२३॥
 कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस ।
 कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंड पाओस ॥२४॥
 कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम ।
 कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन ॥२५॥
 कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अल्प ।
 कई करें काल की साधना, जिया चाहें कल्प ॥२६॥
 कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन ।
 कई सूके बिना खाए, कई करे पिंड पतन ॥२७॥
 यों वैराग जो साधना, करें जुदे जुदे उपचार ।
 यों चले सब पंथ पैड़े, यों खेले सब संसार ॥२८॥
 खेलें सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार ।
 यों जो अंधे गफलती, बांधे जाएँ कतार ॥२९॥
 कोई ना चीन्हे आप को, ना चीन्हें अपनो घर ।
 जिमी पैड़ा ना सूझे काहूं, जात चले इन पर ॥३०॥
 बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर ।
 तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर ॥३१॥

अब देखो ले माएने, खेल बिना हिसाब ।
 आप अकलें देखिए, ए रच्यो खसमें ख्वाब ॥३२॥
 धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक ।
 अनेक रंगे संगे ढंगे, बिध बिध खेलें विवेक ॥३३॥
 खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए ।
 एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥३४॥
 खेल खेलें अनेक रब्दें, मिनों मिने करें क्रोध ।
 जैसे मछ गलागल, छोड़े न कोई ब्रोध ॥३५॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥३४५॥

पंथ पैड़ों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान ।
 कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमान ॥१॥
 कोई केहेवे करम बड़ा, कोई केहेवे काल ।
 कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल ॥२॥
 कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप ।
 कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत ॥३॥
 कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत ।
 कोई कहे मत बड़ी, या विध कई जुगत ॥४॥
 कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत ।
 कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत ॥५॥
 कोई कहे कीरतन बड़ा, कोई कहे श्रवन ।
 कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन ॥६॥
 कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन ।
 कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन ॥७॥

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास ।
 कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विश्वास ॥८॥
 कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस ।
 कोई कहेवे पन बड़ा, यों खेलें परे परबस ॥९॥
 कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन ।
 कोई कहे आदें आद माता, यों लरें तानों तान ॥१०॥
 कोई कहे आत्म बड़ी, कोई कहे परआत्म ।
 कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उत्पन ॥११॥
 कोई कहे सकल व्यापी, देखी तां सब ब्रह्म ।
 कोई कहे ए न लह्या, यों लरें भूले भरम ॥१२॥
 कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन ।
 कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन ॥१३॥
 कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार ।
 कोई कहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार ॥१४॥
 कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे पुरसोतम ।
 यों वेद के वाद अंधकारे, करें लड़ाई धरम ॥१५॥
 जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर ।
 कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर ॥१६॥
 पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट ।
 ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट ॥१७॥
 कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवत ले ।
 खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह ॥१८॥
 भेख जुदे जुदे खेल हीं, जाने खेल अखंड ।
 ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड ॥१९॥

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए ।
 ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए ॥२०॥
 खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल ।
 उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल ॥२१॥
 बिना दिवालें^१ लिखिए, अनेक चित्रामन ।
 सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुन ॥२२॥
 अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर ।
 ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर ॥२३॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥३६८॥

वैराट का कोहेड़ा

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास ।
 डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास ॥१॥
 फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल ।
 वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल ॥२॥
 विध दोऊ^२ देखिए, एक नाभ^३ दूजा मुख^४ ।
 गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख ॥३॥
 कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद ।
 जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद ॥४॥
 देखलावने तुम को, कोहेड़े किए ए ।
 बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह ॥५॥
 आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले ।
 आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह ॥६॥
 करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान ।
 सनमंध पालें इनसों, ए लई सबो मान ॥७॥

१. दिवार (आधार) । २. वैराट तथा वेद । ३. नाभि कमल से ब्रह्माजी तथा ब्रह्माजी से वैराट । ४. चारों मुखों से चारों वेद का गायन ।

नहवाए चरचे^१ अरगजे^२, प्रीतें जिमावें पाक ।
 सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक ॥८॥
 जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें ।
 सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पालें ॥९॥
 हाथ पांऊं मुख नेत्र नासिका, सब सोई अंग के अंग ।
 तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग ॥१०॥
 अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए ।
 चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए ॥११॥
 सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए ।
 सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए ॥१२॥
 छोड़ सगाई आत्म की, करें सगाई आकार ।
 वैराट कोहेड़ा या बिध, उलटा सो कई प्रकार ॥१३॥
 कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध ।
 चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध ॥१४॥
 एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल ।
 जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल ॥१५॥
 चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान ।
 देखलावे नहीं काहू को, गोप^३ राखे नाम ॥१६॥
 अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग ।
 अहनिस दृष्ट आत्म की, नहीं देहसों संग ॥१७॥
 विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट कर्म पाले वेद ।
 स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद ॥१८॥
 उदर कुटम कारने, उत्तमाई देखावे अंग ।
 व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग ॥१९॥

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोट ।
 अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उदोत ॥२०॥
 पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट ।
 वैराट का फेर उलटा, इन बिध सारी सृष्ट ॥२१॥
 एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार ।
 जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार ॥२२॥
 सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच ।
 सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच ॥२३॥
 आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार ।
 आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार ॥२४॥
 मूल^१ बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार ।
 तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार ॥२५॥
 आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास ।
 काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास ॥२६॥
 जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच ।
 ए छल मायाएँ किया, ऐसे रचे उलटे संच ॥२७॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥३९५॥

वेद का कोहेड़ा

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल ।
 याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल ॥१॥
 वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध ।
 मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध ॥२॥
 लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अंधकार ।
 या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार ॥३॥

बंध बांधे या विध, हर वस्तु के बारे नाम ।
 सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम ॥४॥
 लुगे लुगे के जुदे माने, द्वादस के प्रकार ।
 उलटाए मूल माने, बांधे अटकलें अपार ॥५॥
 अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने ।
 मूढ़ों को समझावने, रहेस बीच में आने ॥६॥
 ऐसी कई आंकड़ियों मिने, बोलें बारे तरफ ।
 रहेस रंचक धरें बीचमें, समझाए ना किन हरफ ॥७॥
 बारे तरफों बोलत, एक अखर^१ एक मात्र ।
 ऐसे बांध बतीस श्लोक में, बड़ा छल किया है सास्त्र ॥८॥
 बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बतीस ।
 छल एते आड़े अर्थके, और खोज करें जगदीस ॥९॥
 अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल ।
 अखर^२ अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल ॥१०॥
 जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत ।
 सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत ॥११॥
 सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए ।
 आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए ॥१२॥
 ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान ।
 त्रास स्वांत न होवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान ॥१३॥
 ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान ।
 सो खेंचा खेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान ॥१४॥
 ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़ ।
 बड़े होए खोले माने, एह चली छल रूढ़ ॥१५॥

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित ।
 जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नहीं पंडित ॥१६॥
 एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर^१ हिंदुस्तान^२ ।
 अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान ॥१७॥
 ए खेल जाको सोई जाने, दूजा खेल सारा छल ।
 ए छल के जीव न छूटे छल थें, जो देखो करते बल ॥१८॥
 एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन ।
 ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन ॥१९॥
 मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन ।
 ए सुध काहू न परी, मिने झीलें मोह के जन ॥२०॥
 वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह ।
 देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह ॥२१॥
 ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत ।
 ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत ॥२२॥
 तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन ।
 उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहीं सुंन ॥२३॥
 ए देखो तुम जाहेर, पांचों उपजे तत्व ।
 ए मोह मिने मन खेलहीं, सब मन की उत्पत ॥२४॥
 ए सारों में व्यापक, थावर और जंगम ।
 सबन थें एक है न्यारा, याको जाने सृष्टब्रह्म ॥२५॥
 दसों दिसा भवसागर, देखत एह सुपन ।
 आवरण गिरद मोह को, निराकार कहावे सुंन ॥२६॥
 ए इंड सारा कोहेड़ा, खेल चौदे भवन ।
 सुर असुर कई अनेक भांते, हुआ छल उत्पन ॥२७॥

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत ।
 मच्छ कच्छ सबसागर, रच्यो एह प्रपंच ॥२८॥
 जीवों मिने जुदी जिनसें, कहियत चारों खान ।
 थावर जंगम मिलके, लाख चौरासी निरमान ॥२९॥
 कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल ।
 सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल ॥३०॥
 जो बनजारे^१ खेल के, तिन सिर जम को डंड ।
 कोइक दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड ॥३१॥
 लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार ।
 जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार ॥३२॥
 ए छल बनज छोड़ के, करे बैकुंठ वेपार ।
 ए सत लोक इनका, कोई गले निराकार ॥३३॥
 तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन^२ कोट पचास ।
 पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास ॥३४॥
 पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत ।
 यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत ॥३५॥
 देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक ।
 पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक^३ ॥३६॥
 ॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥४३१॥

प्रकरण अवतारों का

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ ना सूझे हाथ ।
 बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ ॥१॥
 तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन ।
 बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन ॥२॥

ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह ।
 खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह ॥३॥
 तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह ।
 ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह ॥४॥
 ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर ।
 पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर ॥५॥
 ए दसों दिस लोक चौद के, विचार देखे वचन ।
 मोह सागर मथ के, काढ़े सो पांच रतन ॥६॥
 पेहेले कहे मैं साथ को, इन पांचों के नाम ।
 सुकदेव और सनकादिक, कबीर सिव भगवान ॥७॥
 नारायन विष्णु एक अंग, लखमी याथें उतपन ।
 एह समावे याही में, ए नहीं वासना अन^१ ॥८॥
 और एक कागद काढ़िया, सुकदेवजी का सार ।
 हदियों का कोहेड़ा, बेहदी समाचार ॥९॥
 अवतार चौबीस विष्णु के, बैकुंठ थें आवें जाँँ ।
 ए बिध जाहेर त्यों करूं, ज्यों सनंध सब समझाए ॥१०॥
 अवतार एकैस इनमें, तिन आड़ा हुआ कल्पांत ।
 और कहावें तीन बड़े, भी कहूं तिनकी भांत ॥११॥
 अवतार एक श्रीकृष्ण का, मूल मथुरा प्रगट्या जेह ।
 दीदार देवकी वसुदेव को, दिया चतुरभुज एह ॥१२॥
 वचन कहे वसुदेव को, फिरे बैकुंठ अपनी ठौर ।
 पीछे प्रगटे दोए भुजा, सो सरूप सनंध और ॥१३॥
 वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार ।
 सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार ॥१४॥

ए कही सब तुम समझने, भानने मनकी भ्रांत ।
 बेहद विस्तार है अति बड़ा, या ठौर आड़ा कल्पांत ॥१५॥
 भी कहूं तुमें समझाए के, तुम भानो धोखा मन ।
 अवतार सो अकूर संगे, जाए लई मथुरा जिन ॥१६॥
 इनमें भी है आंकड़ी, बिना तारतम समझी न जाए ।
 सो तुम दिल दे समझियो, नीके देऊं बताए ॥१७॥
 सात चार दिन भेख लीला, खेले गोवालों संग ।
 सात दिन गोकुल मिने, दिन चार मथुरा जंग ॥१८॥
 धनक^१ भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार ।
 पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थें अवतार ॥१९॥
 अब आई बात हद की, हिसाब चौदे भवन ।
 सब बात इत याही की, कहे अटकलें और वचन ॥२०॥
 जुध किया जरासिंधसों, रथ आयुध आए खिन मांहें ।
 तब कृष्ण विष्णु मय भए, बैकुंठ में विष्णु तब नांहें ॥२१॥
 बैकुंठ थें जोत फिर आई, सिसुपाल किया हवन ।
 मुख समानी श्रीकृष्ण के, यों कहे वेद वचन ॥२२॥
 किया राज मथुरा द्वारका, बरस एक सौ और बार ।
 प्रभास सब संघार के, जाए खोले बैकुंठ द्वार ॥२३॥
 गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार ।
 नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार ॥२४॥
 कोइक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल ।
 अब आए बसी मेरे उदर, वृध^२ भई पल पल ॥२५॥
 अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल ।
 सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल ॥२६॥

दैत कालिंगा मार के, सब सीधा होसी तत्काल ।
 लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल ॥२७॥
 दैत ऐसा जोरावर, देखो व्याप रह्या वैराट ।
 काम क्रोध अहंकार ले, सब चले उलटी बाट ॥२८॥
 याको संघारसी एक सब्दसों, बेर ना होसी लगार ।
 लोक चौदे पसरसी, इन बुध सब्दको मार ॥२९॥
 वैराट सारा लोक चौदे, चले आप अपनी मत ।
 मन माने खेलें सब कोई, ग्रास लिए असत ॥३०॥
 मैं मारूं तो जो होए कछुए, ना खमें^१ हरफ की डोट^२ ।
 मेरी बुधें एक लवे से, ऐसे मरे कोटान कोट ॥३१॥
 उठी है बानी अनेक आगम, याको गोप है उजास ।
 वैराट सनमुख होयसी, बुध नूर के प्रकास ॥३२॥
 चलसी सब एक चालें, दूजा मुख ना बोले वाक ।
 बोले तो जो कछू होए बाकी, फोड़ उड़ायो तूल आक ॥३३॥
 अब एह वचन कहूं केते, देसी दुनियां को उद्धार ।
 मेरे संग आए बड़ी निध पाई, सो निराकार के पार ॥३४॥
 पार बुध पाए पीछे, याको होसी बड़ो मान ।
 अछर नेक ना छोड़े न्यारी, ए उदयो नेहेचल भान^३ ॥३५॥
 अवतार जो नेहेकलंक को, सो अश्व अधूरो रह्यो ।
 पुरूख देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कह्यो ॥३६॥
 अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए ।
 विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए ॥३७॥
 अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतार का क्या काम ।
 जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम ॥३८॥

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास ।
 तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास ॥३९॥
 समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन ।
 पुरूख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन ॥४०॥
 ॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥४७१॥

गोकुल लीला

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार ।
 तो ए किनकी बुधें विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार ॥१॥
 सुकें अवतार सब कहे, पर बुध में रह्या उरझाए ।
 ए भी सीधा न कहे सक्या, तो क्यों इन कही जाए ॥२॥
 ए तो अछरातीत^१ की, लीला हमारी जेह ।
 पेहेले संसा सबका भान के, पीछे भी नेक कहूं बिध एह ॥३॥
 वैराट की बिध कही तुमको, जिन कछू राखों संदेह ।
 अखंड गोकुल और प्रतिबिंब, ए भी समझाऊं दोए ॥४॥
 ए खेल देख्या तो सांचा, जो अखंड करूं इन बेर ।
 पार वतन देखाय के, सब उड़ाऊं अंधेर ॥५॥
 अंतराए नहीं एक खिन की, अखंड हम पे उजास ।
 रास लीला श्रीकृष्ण गोपी, खेले सदा अविनास^२ ॥६॥
 प्रतिबिंब लीला या दिन थें, फेर के गोकुल आए ।
 चले मथुरा द्वारका, बैकुंठ बैठे जाए ॥७॥
 तारतम नूर प्रगट्या, तिन तेजें फोरयो आकास ।
 लागी सिखर पाताल लो, अब रहे ना पकरयो प्रकास ॥८॥
 किरना सबमें कुलांभियां^३, गयो वैराट को अग्यान ।
 दृढ़ाए चित चौदे लोकको, उड़ाए दियो उनमान^४ ॥९॥

अब जोत पकरी ना रहे, बीच में बिना ठौर ।
 पसरके देखाइया, बृज अखंड जो और ॥१०॥
 बताए देऊं बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर ।
 अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर ॥११॥
 गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास ।
 पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास ॥१२॥
 बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूने गाम ।
 कांठे पुरा टीवा ऊपर, उपनंद का ए ठाम ॥१३॥
 तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर ।
 इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर ॥१४॥
 पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए ।
 तरफ तीसरी वृखभानजी, बसे नाके तीनों ले ॥१५॥
 नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरव जमुना त्रट ।
 छूटक छाया वनस्पति, बृध आड़ी डालों बट ॥१६॥
 सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार ।
 अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार ॥१७॥
 तीन पुरे तीन मामों के, बसे ठाट बस्ती मिल ।
 आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल^१ ॥१८॥
 गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम ।
 दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम ॥१९॥
 नंदजी के आठ मंदिर, मांडवे एक मंडान ।
 पीछे वाड़े गौओं के, तामें आथ^२ सर्वे जान ॥२०॥
 रेत झलके आंगने, दूध चरी चूल्हा आगल ।
 आईजी इन ठौर बैठें, और बैठें सखियां मिल ॥२१॥

मंदिर मोदी तेजपाल को, इत चरी चूल्हा पास ।
 कोइक दिन आए रहे, याको मथुरा में बास ॥२२॥
 सरूप दस इत आरोगें, पाक साक अनेक ।
 भागवंती बाई भली पेरे, रसोई करे विवेक ॥२३॥
 लाइलो नंद जसोमती, रोहिनी बलभद्र बाल ।
 पालक पुत्र कल्यानजी, वाको पुत्र गोपाल ॥२४॥
 बेहेने दोऊ जीवा रूपा, भेलियां रहें मोहोलान ।
 और बाई भागवंती, नारी घर कल्यान ॥२५॥
 पुरो जो वृखभान को, भेलो भाई लखमन ।
 नंदजी के उत्तर दिसे, बसत बास पूरन ॥२६॥
 सरूप साते भली भांते, आरोगें अंन पाक ।
 कल्यान बाई रसोई करे, विध विध के बहु साक ॥२७॥
 राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात ।
 सुदामा कल्यानजी, याथें छोटे कृष्णजी भ्रात ॥२८॥
 कल्याण बाई नारी सुदामा, अंग धरत अति बड़ाई ।
 करत हांसी कई भांतें, याकी स्यामसों सगाई ॥२९॥
 मंदिर छे मांडवे आगे, चरी चढ़े दूध माट ।
 स्यामा गोद प्रभावती, ले बैठत हैं खाट ॥३०॥
 मांगा^१ किया राधाबाई का, पर ब्याहे नहीं प्राणनाथ^२ ।
 मूल सनमंधे एके अंगे, विलसत वल्लभ साथ ॥३१॥
 घुरसे^३ गोरस हेत में, घर घर होत मथन ।
 खेले सब में सांवरो, मिने बाहेर आंगन ॥३२॥
 पुरे सारे बीच चौरे, बैठे गोप बूढ़े भराए ।
 चारों पोहोर गोठ घूघरी, खेलते दिन जाए ॥३३॥

और सबे गौचारने, गोप गोवाला जाए बन ।
 भोर के बन संझा लों, यों होत बृज वरतन ॥३४॥
 तेजपाल मोदी वलोट पूरे, जो कछू चाहिए सोए ।
 घृत लेवे बड़े बड़े ठौरों, और बिरतिया^१ होए ॥३५॥
 घोलिए इत घोल करने, आवत बृज में जे ।
 फेर जाए रहे मथुरा, वस्त भाव ले दे ॥३६॥
 स्याम संग गोवाल ले, खेलत जमुना घाट ।
 विनोद में हम आवें जाएँ, जल भरने इन बाट ॥३७॥
 विलास बृज में पियाजीसों, बरतत एह बात ।
 वचन अटपटे वेधें सब को, अहनिस एही तात ॥३८॥
 पिउ प्रेमैं भीगा खेलहीं, पुरे सारो मांहें ।
 खेले खिन जासों ताए दूजा, सूझे नहीं कछु क्यांहें ॥३९॥
 हम संग खेलें कई रंगे, जाते जमुना पानी ।
 आठों पोहोर अटकी अंगे, एह छब एह बानी ॥४०॥
 घर घर आनंद उछव, उछरंग अंग न माए ।
 विलास विनोद पिया संगे, अह निस करते जाए ॥४१॥
 सुंदर बालक मधुरी बानी, घर ल्यावें गोद चढ़ाए ।
 सेज्याएँ खिन में प्रेमैं पूरा, सुख देवें चित चाहे ॥४२॥
 बाछरू ले बन पधारे, आठवें दसवें दिन ।
 कबूं गोवरधन फिरते, मांहें खेलें बारे बन ॥४३॥
 अखंड लीला अहनिस, हम खेलें पिया के संग ।
 पूरे पिउजी मनोरथ, ए सदा नवले रंग ॥४४॥
 श्री राज बृज आए पीछे, बृज वधू मथुरा ना गई ।
 कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई ॥४५॥

खेल खेलें कुमारका, चीले^१ कुल अभ्यास ।
 दूध दधी छोटे बासन, करे रंग रस बन विलास ॥४६॥
 बृज वधू मिने खेलने, संग केतिक जाए ।
 सांवरो इत दान लेने, करे आड़ी लकुटी ताए ॥४७॥
 दूध दधी माखन ल्यावें, हम पियाजी के काज ।
 तित दधी हमारा छीन के, देवें गोवालों को राज ॥४८॥
 भाग जाए गोवाल न्यारे, हम पकड़ राखें पिउ पास ।
 पीछे हम एकांत पिया संग, करें बन में विलास ॥४९॥
 कुमारका हम संग रहेती, पिउ खेलते सखियन ।
 मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उत्पन ॥५०॥
 अखंड लीला अति भली, नित नित नवले रंग ।
 इन जोतें सब जाहेर किया, हम सखियां पिया के संग ॥५१॥
 आवे जब उजालियां, हम खेलें लेकर ढोल ।
 पिया करें विनोद हांसियां, सो कहे न जाए बोल ॥५२॥
 उलसे गोकुल गाम सारा, हेत हरख अपार ।
 धन धान वस्तर भूखन, द्रव्य अखूट भंडार ॥५३॥
 जनम व्याह नित प्रते, सारे पुरे अनेक होए ।
 नेक कारज करे कछुए, तो बुलावे सब कोए ॥५४॥
 नाटारंभ कई बाजंत्र, धन खरचें अहीर उमंग ।
 साथ सब सिनगार कर, हम आवें अति उछरंग ॥५५॥
 बलगें^२ विनोदें^३ हमसों, देखते सब जन ।
 पर कोई न विचारे उलटा, सब कहे एह निसन^४ ॥५६॥
 बात याकी हम जाने, और जाने हमारी एह ।
 ना समझे कोई दूसरा, ए अंदर का सनेह ॥५७॥

ए होत है हम कारने, पिया पूरे मनोरथ मन ।
 इन समें की मैं क्यों कहूं, साथ सबे धन धन ॥५८॥
 बृज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिखिन ।
 जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन ॥५९॥
 नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन बछ जमुना बन ।
 थिर चर सब पसु पंखी, नित नित लीला नौतन ॥६०॥
 अब ए लीला कहूं केती, अलेखे अति सुख ।
 बरस अग्यारे खेले प्रेमैं, सखियनसों सनमुख ॥६१॥
 एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन ।
 गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उत्पन ॥६२॥
 ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड ।
 एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड ॥६३॥
 सदा लीला जो बृज की, मैं कही जो याकी बिध ।
 अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध ॥६४॥
 ॥प्रकरण॥१९॥चौपाई॥५३५॥

जोगमाया को प्रकरण

अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया^१ आकास^२ ।
 जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास ॥१॥
 इन दोऊ^३ थें न्यारा मंडल, जाको कहियत हैं रास ।
 तहां खेल स्याम सखियन का, ए लीला अविनास ॥२॥
 या ठौर जोगमाया रच्यो, सब सामग्री समेत ।
 तहां हद सब्द न पोहोंचही, तुमे तो भी कहूं संकेत ॥३॥
 जिनस जुगत कहूं केती, अनेक सुख अखंड ।
 जोगमायाए उपाया, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड ॥४॥

१. वेध कर, फोडकर । २. शून्य - निराकार । ३. कालमाया के ब्रह्मांड में खेली गई ११वर्ष ५२ दिन की ब्रज लीला तथा ११. दिन की भेष लीला ।

ए बानी नीके विचारियो, अंतर माहें बाहेर ।
 तुमें जगाऊं कर जागनी, देखाए देऊं जाहेर ॥५॥
 क्योंए न आवे सब्द में, जोगमाया की बिध ।
 तो भी देखाऊं कछुयक^१, लीला हमारी निध ॥६॥
 हम देखे वृन्दावन इतथें, तहां भी खेलें पिया साथ ।
 करें विनोद नित नए, बनही मिने विलास ॥७॥
 काहूं न पाइए जोगमाया की, हम बिना पेहेचान ।
 वासना पांचों अछर की, भले कहावें आप सुजान ॥८॥
 ए माया हमारियां, याके हमपे विचार ।
 और उपजे सब इनथें, ए हमारी आग्या-कार ॥९॥
 रासलीला पेहेले करी, जो मिने वृन्दावन ।
 आनंद-कारी जोगमाया, अविनासी उतपन ॥१०॥
 जोगमाया की जुगत जुई, एक रस एक रंग ।
 एक संगे सदा रहेना, अंगना एकै अंग ॥११॥
 आत्म सदीवे^२ एक है, वासना एकै अंग ।
 मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंड के रंग ॥१२॥
 एक अंगे रंगे संगे, तो क्यों हुई अंतराए ।
 इन सब्द में है आंकड़ी, बिना तारतम समझी ना जाए ॥१३॥
 आंकड़ी अंतरध्यान की, सो ए कहूं सनंध ।
 कोई न जाने हम बिना, इन तारतम के बंध ॥१४॥
 जगाए आवेस लेयके, तब इत भए अंतरध्यान ।
 विलास विरह चित चौकस करने, याद देने घर धाम ॥१५॥
 जोगमाया की जुगत, और न जाने कोए ।
 और कोई तो जाने, जो कोई दूसरा होए ॥१६॥

जोगमायाए जाग्रत होए, जल जिमी वाए अगिन ।
थिर चर सब पसु पंखी, तत्व सबे चेतन ॥१७॥
एक जरा तिन जिमी का, ताके तेज आगे सूर कोट ।
सो सूरज दृष्टें न आवहीं, इन जिमी जरे की ओट ॥१८॥
हेम जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त ।
सोभा जो अविनास की, कही न जाए मुख हस्त ॥१९॥
बरनन करूं एक पात की, सो भी इन जुवां कही न जाए ।
कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पात तले ढंपाए ॥२०॥
सुतेज ससि बन पसु पंखी, तत्व सबें सुतेज ।
सुतेज थिर चर जो कछू, सुतेज रेजा रेज ॥२१॥
किरना बन जिमीय की, सामी किरना ससि प्रकास ।
नूर हम पे खेले नूर में, प्रेमें पियासों रास ॥२२॥
वस्तर भूखन इन जिमी के, सो मुख कहे न जाए ।
तो सुख इन सरूप के, क्यों कर इत बोलाए ॥२३॥
इन सुख बातां बोहोत हैं, सो नेक कह्यो प्रकास ।
पर ए भी जोगमाया मिने, जो कहियत हैं अविनास ॥२४॥
या ठौर लीला करके, हम घर आए सब मिल ।
या इंड कल्पांत करके, फेर अखंड किए मिने दिल ॥२५॥
हम तो सब धाम आए, अछर आपने घर ।
अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर ॥२६॥
हमही खेले बृज रास में, हमही आए इत ।
घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित ॥२७॥
देखे बृज रास नीके, खेल किया पर^१ पर ।
ले भोग विरह विलास को, हम आए निज घर ॥२८॥

देखे दोऊ सुख दुख, तो भी कछुक रह्यो संदेह ।
 सत सख्यें तो फेर, मंडल रचियो एह ॥२९॥
 ए खेल किया हम वास्ते, हम देखन आइयां एह ।
 दोऊ के मनोरथ पूरनें, ए रच्या तमासा ले ॥३०॥
 खेल रचे सुपन के, देखाए मिने सुपन ।
 ए देखे हम न्यारे रहे, कोई और न देखे जन ॥३१॥
 ए खेल सोहागनियों को, देखाया भली भांत ।
 तारतम बुध प्रकास के, पूरी सबों की खांत ॥३२॥
 खेल देख्या जो हम, सो थिर होसी निरधार ।
 सारों मिने सिरोमन, होसी अखंड ए संसार ॥३३॥
 भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर ।
 हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर ॥३४॥
 प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार ।
 अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार ॥३५॥

॥प्रकरण॥२०॥चौपाई॥५७०॥

दया को प्रकरण

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड ।
 ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड ।
 सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूँ ॥टेक॥ ।१॥
 अब गली मैं दया मिने, सागर सखी खीर ।
 दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर ॥२॥
 दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट ।
 दया सबों अंगों पूरन, सब हुआ दया को ठाट ॥३॥

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए ।
 अंगीकार^१ करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए ॥४॥
 पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार ।
 दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार^२ ॥५॥
 एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत ।
 अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत ॥६॥
 सब्द कोई कोई सत उठे, सो भी गए असतमें भिल^३ ।
 सत असत काहू न सुध, दोऊ रहे हिल मिल ॥७॥
 अब दूर करूं असत को, जाहेर करूं सत जोत ।
 गोप रही थी एते दिन, सो अब होत उद्योत ॥८॥
 असत भी करना अखंड, करके सत प्रकास ।
 संध सब समझाए के, करूं तिमर सब नास ॥९॥
 संसा सारा भान के, उड़ाऊं असत अंधेर ।
 निज बुध उठ बैठी हुई, गयो सो उलटो फेर ॥१०॥
 अब फेर सब सीधा फिरे, सत आया सबों दृष्ट ।
 पेहेचान भई प्रकास थें, सुपन की जाहेर सृष्ट ॥११॥
 खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल ।
 अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल ॥१२॥
 आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन ।
 सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन ॥१३॥
 विलास तब विध विध के, होसी हरख अपार ।
 करसी आनंद विनोद, आवसी सकुंडल सकुमार ॥१४॥
 आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड ।
 पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड ॥१५॥

हिस्सा देऊं आवेस का, सैन्य को सब पर ।
 होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर ॥१६॥
 अब साथ न छोड़ूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों ।
 कह्या मेरा साथ न लोपे^१, साथ कहे करूं मैं त्यों ॥१७॥
 लेस^२ है कालमाया को, बढ़यो साथ में विकार ।
 सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार ॥१८॥
 विकार काढूं विधोगतें^३, बढ़ाए दया विस्तार ।
 भानूं भरम तिन भांतसों, ज्यों आल^४ न आवे आकार ॥१९॥
 सुख देऊं मूल वतन के, कोई रच के भला रंग ।
 मन वांछे मनोरथ, देऊं सुख सबों अंग ॥२०॥
 मोह बढ़यो लेस माया को, निद्रा मूल विकार ।
 सुध होए सबों अंगों, कर देऊं तैसो विचार ॥२१॥
 जोलों न काढूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए ।
 जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए ॥२२॥
 आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर ।
 ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर^५ ॥२३॥
 गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर ।
 सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर ॥२४॥
 अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर ।
 अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे^६ फेर ॥२५॥
 प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख ।
 दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख ॥२६॥
 चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार ।
 अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार ॥२७॥

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने^१ ।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, ना सहूं मुख करमाने ॥२८॥

॥प्रकरण॥२१॥चौपाई॥५९८॥

हांसी का प्रकरण

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर ।
पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और ॥१॥
साथ जी तुमको उपज्या, खेल देखन का ख्याल ।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए हांसी का हवाल ॥२॥
मांग्या खेल विनोद का, तिन फेरे तुमारे मन ।
सो सब तुमको विसरे, जो कहे मूल वचन ॥३॥
गूंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग ।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग ॥४॥
आप बंधाने आप सों, इन कोहेड़े अंधेर ।
अमल चढ़्या जानों जेहेर का, फिरत वाही में फेर ॥५॥
अमल चढ़्या क्यों जानिए, कोई फिसले कोई गिरे ।
कोई मिने जाग के, कर पकर सीढ़ी चढ़े ॥६॥
एक गिरे पगथी बिना, वाको दूजी पकरे कर ।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है या पर ॥७॥
एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जात ।
उलट पड़ी सो उलटी, ए खेल है या भांत ॥८॥
ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दोड़ी जाए ।
जल बिना भवसागर, यामें गलचुए^२ खाए ॥९॥
देखो अंत्रीख^३ खड़ियां, हाथ बिना हथियार ।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार ॥१०॥

एक नई कोई आए मिले, सो कहावे आप अजान ।
 बड़ी होए दूजी मिने, समझावत सुजान ॥११॥
 कोई वचन करड़े कहे, किन खण्डनी न खमाए ।
 सो कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए ॥१२॥
 खंडी खांडी रोए रोलाए, दुख देखे दोऊ जन ।
 जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहेँ किन ॥१३॥
 हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग ।
 पूर बिना बहे जात हैं, कोई आड़ी होत अभंग ॥१४॥
 हरखे हांसी हेत में, करसी साथ कलोल^१ ।
 मांगी माया सो देखी नीके, कोई ना हांसी या तोल ॥१५॥
 मूल बिना ए बिरिख खड़ा, ताको फल चाहे सब कोए ।
 फेर फेर लेने दौड़ही, ए हांसी इन बिध होए ॥१६॥
 ए खेल देख्या छल का, बैकुंठ लो पाताल ।
 फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल ना डाल ॥१७॥
 खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए ।
 ए माया मोहोरे देख के, उरझ रहे सब मांहेँ ॥१८॥
 जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार ।
 पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार ॥१९॥
 वतन देखाऊं पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान ।
 एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान^२ ॥२०॥
 ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत ।
 मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत ॥२१॥

॥प्रकरण॥२२॥चौपाई॥६१९॥

जागनी का प्रकरण

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग ।
 तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ॥१॥
 कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह ।
 तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह ॥२॥
 अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार ।
 रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार ॥३॥
 अब दुख ना देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन ।
 उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन ॥४॥
 आगे कलकली कलकलाए, तोहे ना गयो विकार ।
 कठिन सही तुम खंडनी, वचन खांडा धार ॥५॥
 सो ए वचन मोहे सालहीं, कठिन तुमको जो कहे ।
 सोहागनियों को निद्रा मिने, मूल घर विसर गए ॥६॥
 अब गालूं ताओ दिए बिना, करूं सो रस कंचन ।
 कस चढ़ाऊं अति रंगे, दोऊ पेर करूं धंन धंन ॥७॥
 जानूं साथजी विदेस आए, दुख देखे कई भांत ।
 जो लों ना इत सुख पावहीं, तो लों ना मोहे स्वांत ॥८॥
 नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए ।
 मूल घर देखाइए, तब क्यों कर रहेवे सोए ॥९॥
 खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत ।
 दीजे आप ओलखाए के, यों साख देवाए साख्यात ॥१०॥
 जगाऊं सुख याद देने, करूं आप अपनी बात ।
 पीछे हम तुम मिलके, जाहेर कीजे विख्यात ॥११॥

आगे आवेस मोपे पिया को, दे अंग लई जगाए ।
 निसंक निद्रा उड़ाए के, साख्यात लई बैठाए ॥१२॥
 अब रह्यो न जाए नेक न्यारे, यों किए जागनी ले ।
 अहंमेव जाग्या धाम का, हम मिने आया जे ॥१३॥
 पेहेले जोगमाया भई रास में, ताको सो अति उजास ।
 पर साथ जोग होसी जागनी, ताको कह्यो न जाए प्रकास ॥१४॥
 अब विछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए ।
 अब नेक वाओ इन माया की, जानों जिन आवे ताए ॥१५॥
 साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार ।
 हँस हँस हेते हरख में, तुम नाचसी निरधार ॥१६॥
 प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर ।
 मन कल्पे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर ॥१७॥
 मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं ।
 ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं ॥१८॥
 सत सुख में सुख देयसी, इन जिमी के दुख जेह ।
 तुम हंसोगे हरख में, रस देसी दुखड़ा एह ॥१९॥
 हम उपाया सुख कारने, ए जो मांग्या खेल तुम ।
 दुख दे वतन बोलावहीं, ए इन घर नहीं रसम ॥२०॥
 सेहेजल^१ सुख तुमें है सदा, अल्प नहीं असुख ।
 तुम सुख को स्वाद लेने, खेल मांग्या ए दुख ॥२१॥
 खेल मांग्या दुख का, तब कह्या हम तुम ।
 दुख का खेल तुमको, क्यों देखावें हम ॥२२॥
 दुख तो क्योंए देऊं नहीं, तो खेल देख्या क्यों जाए ।
 खंत लगी खरी खेल की, तिनको सो एह उपाए ॥२३॥

पिया हम खेल जान्या घरका, ज्यों खेल करत सदाए ।
 हम खेल खड़े यों देखसी, ए भी इन अदाए ॥२४॥
 वस्तोगते^१ दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट ।
 जो देखो वचन जागके, तो नहीं कछुए कष्ट ॥२५॥
 लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी ।
 याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी ॥२६॥
 फेर देखो जो नजरों, तो रहेसी न्यारे दुख ।
 करोगे इत खेल रंगे, विनोद बातें मुख ॥२७॥
 सागर सुख में झीलते, तहां दुख नहीं प्रवेश ।
 तो दुख तुम मांगिया, सो देखाया लवलेस ॥२८॥
 पौढ़े भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक ।
 बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की विसेक ॥२९॥
 दुख तुमारे मैं न सहूं, सो जानो चित्त चौकस ।
 ए दुख देसी बोहोत सुख, खेल होसी रंग रस ॥३०॥
 साथ को इन जिमी के, सुख देने को हरख अपार ।
 रासमें रंग खेल के, भेले जागिए निरधार ॥३१॥
 अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए सुख ।
 मैं तुमारे न सेहे सकों, जो देखे तुम दुख ॥३२॥
 लेहेर लगे तुमें मोह की, सो आत्म मेरी न सहे ।
 अब खंडनी भी न करूं, जानों दुखाऊं क्यों मुख कहे ॥३३॥
 अब क्यों देऊं कसनी, मुख करमाने^२ न सहूं ।
 तिन कारन सब्द कठन, मेरे प्यारों को मैं क्यों कहूं ॥३४॥
 अब तारूं तुमें या बिध, ज्यों लगे न लेहेर लगार ।
 सुखपाल में बैठाए सुखें, घर पोहोंचाऊं निरधार ॥३५॥

उपजाए देऊं अंग थें, रस प्रेम के प्रकार ।
 प्रकास पूरन करके, सब टालूं रोग विकार ॥३६॥
 अंग दिए बिना आवेस, नहीं प्रेम उपाए ।
 आवेस दे करूं जागनी, लेऊं अंग में मिलाए ॥३७॥
 अब भेले तो सब चलिए, जो अंग न काहूं अटकाए ।
 तो तुमें होवे जागनी, जो सांचवटी बटाए ॥३८॥
 अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग ।
 सुख देऊं भली भांतसों, ज्यों होए न बीच में भंग ॥३९॥
 ए लीला करूं इन भातें, तो रास रंग खेलाए ।
 विध विध के सुख विलसिए, विरह जागनी सह्यो न जाए ॥४०॥
 जगाए नीके सुख देऊं, रहेस खेलाऊं रंग ।
 सत सुख क्यों आवहीं, जोलों ना दीजे अंग ॥४१॥
 अंगना को अंग दीजिए, अंगना लीजे अंग ।
 पास देऊं पूरा प्रेम का, नेहेचल^१ का जो रंग ॥४२॥
 असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग ।
 परआतम सों बंध बांधूं, ज्यों होए ना कबहूं भंग ॥४३॥
 पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ ।
 ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख ॥४४॥
 सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी प्रमान ।
 जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान ॥४५॥
 आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए ।
 पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए ॥४६॥
 जो जाग बैठे धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए ।
 तारतम तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल विध सुख लहिए ॥४७॥

आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी ।
 आवेस जागनी तारतमें, जो देखो जाग विचारी ॥४८॥
 ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल ।
 आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल ॥४९॥
 तारतम के सुख साथ आगे, बिध बिध पियाने कहे ।
 पीछे ए सुख इंद्रावती को, दया कर सारे दिए ॥५०॥
 धंन पिया धंन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई ।
 धंन धंन सखी मैं सोहागनी, जो मो में ए निध आई ॥५१॥
 पिया ल्याए मुझ कारने, और हुआ न काहूं जान ।
 मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया प्रमान ॥५२॥
 ए बानी सबमें पसरी, पर किया न साथे विचार ।
 पीछे दया कर दर्ई धनिँ, अंग इंद्रावती विस्तार ॥५३॥
 बोहोत धन ल्याए धनी धामथें, बिध बिध के प्रकार ।
 सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार ॥५४॥
 तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप ।
 मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप ॥५५॥
 साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतम को अवतार ।
 वासना होसी सो बलगसी^१, इन वचन के विचार ॥५६॥
 सरूप साथकी पेहेचान, तारतममें उजास ।
 जोत उदोत प्रगट पूरन, इंद्रावती के पास ॥५७॥
 वासनाओं की पेहेचान, बानी करसी तिन ताल^२ ।
 निसंक^३ निद्रा उड़ जासी, सुनते ही तत्काल ॥५८॥
 एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र ।
 होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र ॥५९॥

ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग ।
 सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग ॥६०॥
 वासना जीव का बेवरा^१ एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात ।
 जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात ॥६१॥
 भी बेवरा वासना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम ।
 जीव का घर है नींद में, वासना घर श्री धाम ॥६२॥
 ना होए नया न पुराना, श्री धाम इन प्रकार ।
 घटे बड़े नहीं पत्र एक, सत सदा सर्वदा सार ॥६३॥
 जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग ।
 सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग ॥६४॥
 तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग ।
 ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग ॥६५॥
 इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग ।
 जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेममें खेलाऊं रंग ॥६६॥
 बुध तारतम जित भेले, तित पेहेले जानो आवेस ।
 अग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती प्रवेस ॥६७॥
 सुख देऊं सुख लेऊं, सुख में जगाऊं साथ ।
 इंद्रावती को उपमा, मैं दर्ई मेरे हाथ ॥६८॥
 मैं दया तुमको करी, जो देखो नैना खोल ।
 ना खोलो तो भी देखोगे, छाया निकसी ब्रह्मांड फोड़ ॥६९॥
 ए खेल देख्या बैठे घर, अग्याएँ सैयों नजर ।
 जब अंतर आंखां खुली, तब दृष्ट घर की घर ॥७०॥
 निज नैना देऊं खोलके, ज्यों आड़ी न आवे मोह सृष्ट ।
 होसी पेहेचान सत सुख, निज वतन देखो दृष्ट ॥७१॥

तारतम का जो तारतम, अंग इन्द्रावती विस्तार ।
 पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार ॥७२॥
 ब्रह्मांड दोऊ अखंड किए, तामें लीला हमारी ।
 तीसरा ब्रह्मांड अखंड करना, ए लीला अति भारी ॥७३॥
 तीन लीला माया मिने, हम प्रेममें विलसी जेह ।
 ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह ॥७४॥
 एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए ।
 तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए ॥७५॥
 पेहेले दृष्टें हमारे जो आइया, तेते मिने उजास ।
 हम खेलें तिन उजासमें, और लोक सब को नास ॥७६॥
 अब लोक चौदे तरफ चारों, प्रकास होसी साथ जोग ।
 जीव सबको जगाए के, टालूं सो निद्रा रोग ॥७७॥
 हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले निज घर ।
 वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर ॥७८॥
 जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार ।
 दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार ॥७९॥
 हम सदा संग पिया के, जो रूहें सोहागिन ।
 सो अग्यांएँ उठ बैठसी, सब अपने वतन ॥८०॥
 अव्वल सब सोहागनी, एक ठौर पिया पास ।
 सबों सुख होसी सोहागनी, रंग रस प्रेम विलास ॥८१॥
 जो जोत होसी जागनी, ए नूर बिना हिसाब ।
 लोक चौदे पसरसी, तब उड़ जासी ए ख्वाब ॥८२॥
 ए बानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस ।
 वस्त देखाए बिना, वैराट न होवे बस ॥८३॥

वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड ।
 हम खेल देख्या इछाए कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड ॥८४॥
 अनेक आगे होएसी, इन बानी को विस्तार ।
 ए नेक कह्या मैं करने, अखंड ए संसार ॥८५॥
 ए बानी कही मैं जाहेर, सो विस्तरसी विवेक ।
 मैं गुझ कही है साथ को, पर सो है अति विसेक ॥८६॥
 संसार सब के अंग में, मेरी बुध को करूं प्रवेश ।
 असत सब होसी सत, मेरे नूर के आवेश ॥८७॥
 बुध मूल अछर^१ की, आई हमारे पास ।
 जोगमाया को ब्रह्मांड, तिन हिरदे था रास ॥८८॥
 ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप ।
 वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप ॥८९॥
 बृज रास में हम रमे, बुध हती रास में रंग ।
 अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग ॥९०॥
 इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उत्पन ।
 एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम ॥९१॥
 दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनों मिने बाथ ।
 एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ ॥९२॥
 अछर^१ केरी^२ वासना, कहे जो पांच रतन ।
 कागद ल्याया बेहद का, सुकदेव मुनी धन धन ॥९३॥
 विष्णु मन खेल ले खड़ा, पकड़ के दोऊ पार ।
 भली भांत भेले विष्णु के, सनकादिक थंभ चार ॥९४॥
 महादेवजीएँ बृज लीला, ग्रह्यो अखंड ब्रह्मांड ।
 अछर चित सदासिव, ए यों कहावे अखंड ॥९५॥

कबीर साख जो पूरने, ल्याया सो वचन विसाल^१ ।
 प्रगट पांचो ए भए, दूजे सागर आड़ी पाल ॥९६॥
 हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर ।
 बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर ॥९७॥
 खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल ।
 तब आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल^२ ॥९८॥
 अछर खेल इछाए कर, छर^३ रच के उड़ात ।
 वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात ॥९९॥
 पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार ।
 अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार ॥१००॥
 लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार ।
 निमख एक ना विसरसी, रहेसी दिल में सार ॥१०१॥
 उत्तम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार ।
 वासना पांचों बुध ले, साख पूरसी संसार ॥१०२॥
 मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर ।
 तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर ॥१०३॥
 मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी^४ आकार ।
 बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार ॥१०४॥
 बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग ।
 अछर^५ हिरदे या बिध, अधिक चढ़सी रंग ॥१०५॥

॥प्रकरण॥२३॥चौपाई॥७२४॥

निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर ।
 दया सागर जोस का, किन रहे न पकस्यो पूर ॥१॥

ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहे ।
 कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहे ॥२॥
 ए अगम^१ अकथ^२ अलख^३, सो जाहेर करें हम ।
 पर नेक नेक प्रकासहीं, जिन सेहे न सको तुम ॥३॥
 जो कबू कानो ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए ।
 तार्थें डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए ॥४॥
 नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुम सों अंतर ।
 खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातिर ॥५॥
 तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सुख सब तुम हस्तक ।
 दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक ॥६॥
 अजूं केहेती सकुचों, पर बोहोत बड़ी है बात ।
 सोभा पाई तुम यार्थें बड़ी, जो पिया वतन साख्यात ॥७॥
 इंड अखंड भी जाहेर, किए जागनी जोत ।
 अब सुन्य फोड़ आगे चली, जहां थें इंड पैदा होत ॥८॥
 सोभा इन मंडल की, क्यों कर कहूं वचन ।
 सो बुध नूर जाहेर करी, जो कबू सुनी न कही किन ॥९॥
 रास बरनन भी ना हुआ, तो अछर बरनन क्यों होए ।
 कही न जाए हृद में, पर तो भी कहूं नेक सोए ॥१०॥
 जोगमाया तो माया कही, पर नेक न माया इत ।
 ख्वाबी दम सत होवहीं, सो अछर की बरकत ॥११॥
 तार्थें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कई उपजत ।
 नास करे कई पल में, या चित्त थिर थापत ॥१२॥
 तहां एक पलक न होवहीं, इत कई कल्प वितीत ।
 कई इंड उपजे होए फना, ऐसे पल में इन रीत ॥१३॥

जागते ब्रह्मांड उपजे, पाव पल में अनेक ।
सो देखे सब इत थें, विध विध के विवेक ॥१४॥
ए लीला है अति बड़ी, दृष्टें उपजे ब्रह्मांड ।
ए खेल खेले नित नए, याकी इछा है अखंड ॥१५॥
ए मंडल है सदा, जाए कहिए अछर ।
जाहेर इत थें देखिए, मिने बाहेर थें अंतर ॥१६॥
उतपन देखी इंड की, न अंतर रत्ती रेख ।
सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक ॥१७॥
मोह उपज्यो इतथें, जो सुन्य निराकार ।
पल मीच ब्रह्मांड किया, कारज कारन सार ॥१८॥
मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुन ।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन ॥१९॥
मन पोहोंचे इतलो, बुध तुरिया^१ वचन ।
उनमान^२ आगे केहेके, फेर पड़े मांहे सुन ॥२०॥
जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे सुन ।
वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचे अछर वतन ॥२१॥
ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत ।
झूठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वासना सत ॥२२॥
सुपने नगरी देखिए, तिन सब में एक रस ।
आपै होवे सब में, पांचों तत्व दसो दिस ॥२३॥
तिनमें भी दोए भांत है, एक वासना दूजे जीव ।
संसा न राखूं किनका, मैं सब जाहेर कीव ॥२४॥
देखो सुपनमें कई लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात ।
जब देखें मारते आपको, तब उठे अंग धुजात^३ ॥२५॥

वासना उत्पन्न अंग थें, जीव नींद की उत्पत्त ।
 कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत ॥२६॥
 ब्रह्मांड चौदे तबक, सब सत का सुपन ।
 इन दृष्टांतें समझियो, विचारो वासना मन ॥२७॥
 सुपन सत सख्य को, तुम कहोगे क्यों कर होए ।
 ए बिध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए ॥२८॥
 एक तीर खेंच के छोड़िए, तिन बेधाए कई पात ।
 सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात ॥२९॥
 पर पेहेले पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए ।
 यामें सुपन कई उपजें, बेर एती भी कही न जाए ॥३०॥
 तो बेर एक की कहा कहूं, इत हुआ कहां सुपन ।
 पर सत ठौर का असत में, दृष्टांत नहीं कोई अन ॥३१॥
 इत भेले रूह नूर बुध, और अग्या दया प्रकास ।
 पूरों आस अछर की, मेरा सुख देखाए साख्यात ॥३२॥
 इत भी उजाला अखंड, पर किरना न इत पकराए ।
 ए नूर सब एक होए चल्या, आगूं अछरातीत समाए ॥३३॥
 ए नूर आगे थें आइया, अछर ठौर के पार ।
 ए सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार ॥३४॥
 वतन देखाया इत थें, सो केते कहूं प्रकार ।
 नूर अखंड ऐसा हुआ, जाको वार न काहूं पार ॥३५॥
 किए विलास अंकूर थें, घर के अनेक प्रकार ।
 पिया सुंदरबाई अंग में, आए कियो विस्तार ॥३६॥
 ए बीज वचन दो एक, पिया बोए कियो प्रकास ।
 अंकूर ऐसा उठिया, सब किए हांस विलास ॥३७॥

सूर ससि कई कोट कहूं, नूर तेज जोत प्रकास ।
 ए सब्द सारे मोहलों, और मोह को तो है नास ॥३८॥
 अब इन जुबां मैं क्यों कहूं, निज वतन विस्तार ।
 सब्द ना कोई पोहोंचहीं, मोह मिने हुआ आकार ॥३९॥
 मोह सो जो ना कछू, इनसे असंग बेहद ।
 सत को असत ना पोहोंचहीं, या बिध ना लगे सब्द ॥४०॥
 बेहद को सब्द ना पोहोंचहीं, तो क्यों पोहोंचे दरबार ।
 लुगा न पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार ॥४१॥
 कोट हिस्से एक लुगे के, हिसाब किया मिहीं कर ।
 एक हिस्सा न पोहोंच्या रास लों, ए मैं देख्या फेर फेर ॥४२॥
 मैं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं आप अपनी बात ।
 अब बोलते सरमाऊं, तार्थें कही न जाए निध साख्यात ॥४३॥
 वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं ।
 देखां तो जो होए दूसरा, नहीं गांउं नांउं न ठांउं ॥४४॥
 जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन ।
 तार्थें विस्तार अन्दर, बाहेर होत हूं मुंन^१ ॥४५॥
 एता भी मैं तो कह्या, जो साथ को भरम का घैन^२ ।
 वचन दो एक केहेके, टालूं सो दुतिया चैन^३ ॥४६॥
 साथ के सुख कारने, इंद्रावती को मैं कह्या ।
 तार्थें मुख इंद्रावती के, कलस सबन का भया ॥४७॥

॥प्रकरण॥२४॥चौपाई॥७७१॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण १७२, चौपाई ४६६९

॥ कलस हिन्दुस्तानी - तौरेत^४ सम्पूर्ण ॥